ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN NO.: 2347-2944, RNI : UPBIL04292,REG. No.: 561/2013-2014Vol.-2,No.-2 **PP-427-435**,YEAR-2014

आधुनिक युद्ध की प्रकृति में परिवर्तन और सैन्य रणनीति का विकासः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 विशाल कुमार श्रीवास्तव

सारांश – *आधुनिक युग में युद्ध की प्रकृति, स्वरूप, साधन और उद्देश्यों में व्यापक परिवर्तन हुआ है। प्राचीन एवं परंपरागत युद्ध मुख्यतः स्थल सेना, प्रत्यक्ष सैन्य संघर्ष, क्षेत्रीय विजय और राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना पर आधारित थे। किंतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास, औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण, परमाणु हथियारों के प्रसार, सूचना क्रांति, साइबर तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा मानवरहित प्रणालियों के विस्तार ने युद्ध की पारंपरिक अवधारणा को परिवर्तित कर दिया है। वर्तमान समय में युद्ध केवल सैन्य बलों के बीच होने वाला प्रत्यक्ष संघर्ष नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, तकनीकी, कूटनीतिक और सूचनात्मक क्षेत्रों में भी संचालित होता है। इसी कारण सैन्य रणनीति का स्वरूप भी निरंतर विकसित हो रहा है।*

प्रस्तावना– आधुनिक युद्ध में पारंपरिक सैन्य शक्ति के साथ–साथ खुफिया जानकारी, अंतरिक्ष आधारित निगरानी, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, सटीक मारक क्षमता और संयुक्त सैन्य अभियानों का महत्त्व बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त आतंकवाद, छद्म युद्ध तथा गैर–राज्य अभिकर्ताओं की भूमिका ने राष्ट्रीय सुरक्षा के सामने नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। भारत जैसे विशाल एवं विविधतापूर्ण देश के लिए इन परिवर्तनों का अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि उसे पारंपरिक सैन्य खतरों के साथ–साथ सीमा विवाद, आतंकवाद, साइबर हमलों और क्षेत्रीय सामरिक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक युद्ध की बदलती प्रकृति का विश्लेषण करना तथा उसके अनुरूप सैन्य रणनीति के विकास, चुनौतियों और संभावनाओं का मूल्यांकन करना है।

युद्ध मानव सभ्यता के राजनीतिक और सामाजिक इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। प्राचीन काल से ही राज्य अपनी सुरक्षा, संसाधनों, क्षेत्रीय विस्तार और राजनीतिक हितों की रक्षा के लिए सैन्य शक्ति का प्रयोग करते रहे हैं। समय के साथ युद्ध के उद्देश्य, साधन, संगठन और संचालन की पद्धतियों में परिवर्तन होता रहा है। घुड़सवार सेना, तलवार, धनुष और पारंपरिक हथियारों से प्रारंभ होकर युद्ध की प्रक्रिया आधुनिक तोपखाने, टैंकों, लड़ाकू विमानों, मिसाइलों, परमाणु हथियारों तथा युद्ध प्रणालियों तक पहुँच गई है। युद्ध की प्रकृति को समझने के लिए कार्ल वॉन क्लॉजविट्ज का विचार उल्लेखनीय है। उन्होंने युद्ध को राजनीति की अन्य साधनों द्वारा निरंतरता के रूप में प्रस्तुत किया। इस दृष्टिकोण के अनुसार युद्ध केवल हिंसक कार्रवाई नहीं है, बल्कि राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति का एक साधन भी है। यद्यपि युद्ध के साधन और स्वरूप बदलते रहते हैं, फिर भी राजनीति, शक्ति और राष्ट्रीय हितों के साथ उसका संबंध बना रहता है।

बीसवीं शताब्दी के दोनों विश्वयुद्धों ने औद्योगिक क्षमता, जनशक्ति, सैन्य संगठन और प्रौद्योगिकी के महत्त्व को स्पष्ट किया। द्वितीय विश्वयुद्ध में वायु शक्ति, पनडुब्बियों, टैंकों, विमानवाहक पोतों और परमाणु हथियारों ने युद्ध के परिणामों को प्रभावित किया। इसके

असिस्टेंट प्रोफेसर– सैन्य अध्ययन, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर (उ0प्र0) भारत।

पश्चात शीतयुद्ध के दौरान परमाणु प्रतिरोध, सैन्य गठबंधनों, गुप्त अभियानों और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का महत्त्व बढ़ा।

इक्कीसवीं शताब्दी में युद्ध की प्रकृति और अधिक जटिल हो गई है। अब किसी देश की सुरक्षा केवल उसकी सेना की संख्या या हथियारों की गुणवत्ता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी तकनीकी क्षमता, आर्थिक सामर्थ्य, खुफिया तंत्र, संचार व्यवस्था, औद्योगिक आधार और सामाजिक स्थिरता पर भी निर्भर करती है। यूक्रेन युद्ध जैसे समकालीन संघर्षों ने प्रदर्शित किया है कि आधुनिक युद्ध में पारंपरिक सैन्य अभियानों के साथ उपग्रह आधारित निगरानी, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, साइबर गतिविधियों और सूचना अभियानों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। इस परिप्रेक्ष्य में आधुनिक युद्ध की प्रकृति में आए परिवर्तनों का अध्ययन तथा सैन्य रणनीति के विकास का विश्लेषण सामरिक अध्ययन और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक हो जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य एवं पद्धति– प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- आधुनिक युद्ध की बदलती प्रकृति और उसके प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना।
- सैन्य प्रौद्योगिकी तथा सूचना क्रांति के प्रभावों को समझना।
- पारंपरिक युद्ध और आधुनिक युद्ध के बीच अंतर स्पष्ट करना।
- आधुनिक सैन्य रणनीति के प्रमुख आयामों का मूल्यांकन करना।
- भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में इन परिवर्तनों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

यह अध्ययन मुख्यतः ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें सैन्य सिद्धांतों, ऐतिहासिक अनुभवों, समकालीन संघर्षों और राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी अवधारणाओं के आधार पर आधुनिक युद्ध के विकास को समझने का प्रयास किया गया है।

युद्ध की प्रकृति में ऐतिहासिक परिवर्तन– प्राचीन एवं मध्यकालीन युद्धः प्राचीन काल में युद्ध का स्वरूप मुख्यतः भौगोलिक परिस्थितियों, सैन्य संगठन और उपलब्ध हथियारों से निर्धारित होता था। भारतीय परंपरा में पैदल सेना, घुड़सवार सेना, हाथियों और रथों का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य की सुरक्षा, गुप्तचर व्यवस्था, कूटनीति, युद्ध तथा शत्रु की शक्ति के आकलन पर विशेष बल दिया गया है। मध्यकाल में घुड़सवार सेना, दुर्गों, तलवारों, धनुष–बाण और बारूद आधारित हथियारों का महत्त्व बढ़ा। इस काल में युद्ध का उद्देश्य प्रायः क्षेत्रीय नियंत्रण, साम्राज्य विस्तार, संसाधनों की प्राप्ति और राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करना था। हालाँकि इन युद्धों में भी कूटनीति, छल, गुप्तचर गतिविधियाँ और मनोवैज्ञानिक प्रभाव महत्त्वपूर्ण थे, लेकिन संचार तथा परिवहन की सीमाओं के कारण बड़े क्षेत्र में सैन्य अभियानों का संचालन कठिन था।

औद्योगिक क्रांति और आधुनिक युद्धः औद्योगिक क्रांति ने युद्ध की प्रकृति में निर्णायक परिवर्तन किया। मशीनों, रेलवे, टेलीग्राफ, आधुनिक हथियारों और बड़े पैमाने पर उत्पादन ने सेनाओं की संगठनात्मक क्षमता बढ़ाई। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में सैन्य शक्ति का संबंध औद्योगिक उत्पादन, आर्थिक

संसाधनों और तकनीकी विकास से अधिक गहरा हो गया।

प्रथम विश्वयुद्ध में मशीनगनों, भारी तोपों, खाइयों, रासायनिक हथियारों और विमानों का व्यापक उपयोग हुआ। इससे युद्ध अत्यधिक विनाशकारी और दीर्घकालिक बन गया। द्वितीय विश्वयुद्ध में टैंकों, वायु शक्ति, विमानवाहक पोतों, रडार और परमाणु हथियारों ने सैन्य रणनीति को नई दिशा दी। इस अवधि में युद्ध केवल अग्रिम मोर्चे तक सीमित नहीं रहा। उद्योग, परिवहन, ऊर्जा उत्पादन और नागरिक अर्थव्यवस्था भी युद्ध के महत्त्वपूर्ण घटक बन गए। इस प्रकार व्यापक युद्ध की अवधारणा विकसित हुई, जिसमें राज्य की लगभग संपूर्ण क्षमता सैन्य उद्देश्यों के लिए संगठित की जा सकती थी।

शीतयुद्ध और परमाणु रणनीतिः द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका और सोवियत संघ के बीच वैचारिक तथा सामरिक प्रतिस्पर्धा ने युद्ध की प्रकृति को प्रभावित किया। परमाणु हथियारों के विकास ने प्रत्यक्ष महाशक्ति युद्ध की संभावित लागत को अत्यधिक बढ़ा दिया। इस काल में परमाणु प्रतिरोध, हथियारों की दौड़, सैन्य गठबंधन, गुप्तचर गतिविधियाँ और सीमित युद्ध प्रमुख रणनीतिक साधन बने। प्रतिरोध की अवधारणा इस विचार पर आधारित थी कि यदि किसी आक्रमण का उत्तर विनाशकारी हो सकता है, तो विरोधी उसके आरंभ से पहले ही हतोत्साहित हो सकता है। हालाँकि परमाणु हथियारों ने बड़े युद्ध की संभावना को समाप्त नहीं किया, लेकिन उन्होंने राज्यों को सैन्य शक्ति के प्रयोग में संभावित परिणामों पर अधिक गंभीरता से विचार करने के लिए बाध्य किया। इसी काल में स्थानीय संघर्षों, प्रॉक्सी युद्धों और अप्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा का महत्त्व भी बढ़ा।

आधुनिक युद्ध की बदलती प्रकृति– पारंपरिक युद्ध से बहुआयामी युद्ध की ओरः परंपरागत युद्ध में मुख्य ध्यान स्थल, समुद्र और वायु क्षेत्र में प्रत्यक्ष सैन्य टकराव पर केंद्रित रहता था। आधुनिक युद्ध में इसके अतिरिक्त साइबर क्षेत्र, अंतरिक्ष, सूचना तंत्र, वित्तीय नेटवर्क और सामाजिक संचार माध्यम भी महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। आज किसी देश की बिजली व्यवस्था, संचार नेटवर्क, बैंकिंग प्रणाली, परिवहन व्यवस्था या सैन्य कमान प्रणाली पर हमला राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर सकता है। इस प्रकार युद्ध के प्रभाव केवल युद्धभूमि तक सीमित नहीं रहते, बल्कि नागरिक जीवन और आर्थिक स्थिरता तक पहुँचते हैं। बहुआयामी युद्ध में विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों का समन्वय आवश्यक होता है। सैन्य बलों को केवल हथियारों का संचालन नहीं, बल्कि तकनीकी सूचनाओं का विश्लेषण, संचार व्यवस्था की सुरक्षा और विभिन्न संस्थानों के साथ समन्वय भी करना पड़ता है।

सूचना युद्ध– सूचना क्रांति ने युद्ध की योजना, संचालन और मूल्यांकन को बदल दिया है। आधुनिक सेनाएँ उपग्रहों, रडार, सेंसरों, डिजिटल संचार और कंप्यूटर आधारित प्रणालियों के माध्यम से युद्धक्षेत्र की जानकारी प्राप्त करती हैं। कंप्यूटर नेटवर्क, डिजिटल अवसंरचना और सूचना प्रणालियों को प्रभावित करने वाली गतिविधियाँ आती हैं। इनका उद्देश्य संवेदनशील सूचनाओं की चोरी, सेवाओं में व्यवधान, संचार प्रणाली को बाधित करना अथवा विरोधी की निर्णय लेने की क्षमता को कमजोर करना हो सकता है। इसके अतिरिक्त हमलों के प्रभावों का आकलन करना और यह

निर्धारित करना भी कठिन हो सकता है कि किसी घटना के लिए किस स्तर की प्रतिक्रिया उचित होगी। इसी कारण आधुनिक सैन्य रणनीति में सुरक्षा, डिजिटल अवसंरचना की मजबूती, डेटा संरक्षण और संकट के समय वैकल्पिक संचार व्यवस्था का महत्त्व बढ़ गया है।

मानवरहित प्रणालियाँ– मानवरहित हवाई प्रणालियों ने आधुनिक सैन्य अभियानों में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। इनका उपयोग निगरानी, टोही, सीमावर्ती गतिविधियों के निरीक्षण, लक्ष्य की पहचान और कुछ परिस्थितियों में हथियारों के संचालन के लिए किया जाता है। ये कुछ ऐसे कार्य कर सकते हैं जिनमें मानवयुक्त विमानों या सैनिकों को अधिक जोखिम उठाना पड़ सकता है। अपेक्षाकृत कम लागत वाली प्रणालियाँ भी कई प्रकार के सामरिक कार्यों में प्रभावी हो सकती हैं। उनकी प्रभावशीलता संचार, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, वायु रक्षा, रसद और अन्य सैन्य क्षमताओं से जुड़ी होती है। तकनीक के प्रसार से सैन्य रणनीति में परिवर्तन के साथ–साथ नैतिक और कानूनी प्रश्न भी उत्पन्न हुए हैं। विशेष रूप से स्वायत्त हथियार प्रणालियों में मानवीय नियंत्रण, नागरिकों की सुरक्षा और जवाबदेही सुनिश्चित करना आवश्यक है।

अंतरिक्ष आधारित सैन्य क्षमताएँ– आधुनिक युद्ध में अंतरिक्ष का महत्त्व लगातार बढ़ रहा है। उपग्रह संचार, नेविगेशन, मौसम संबंधी जानकारी और निगरानी प्रणालियाँ सैन्य अभियानों को सहयोग प्रदान करती हैं। उपग्रहों की सहायता से सेनाएँ दूरस्थ क्षेत्रों की गतिविधियों का आकलन कर सकती हैं और विभिन्न सैन्य इकाइयों के बीच समन्वय स्थापित कर सकती हैं। दूसरी ओर, अंतरिक्ष आधारित प्रणालियों पर निर्भरता नए जोखिम भी पैदा करती है। यदि किसी देश की संचार या नेविगेशन व्यवस्था बाधित हो जाए, तो सैन्य अभियानों के साथ नागरिक परिवहन, वित्तीय सेवाएँ और अन्य आवश्यक गतिविधियाँ भी प्रभावित हो सकती हैं। इसलिए अंतरिक्ष परिसंपत्तियों की सुरक्षा, वैकल्पिक संचार साधनों का विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग आधुनिक सैन्य रणनीति के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं।

अप्रत्यक्ष संघर्ष– यह युद्ध ऐसी रणनीतिक अवधारणा है, जिसमें पारंपरिक सैन्य शक्ति के साथ अनियमित युद्ध, अन्य गतिविधियाँ, दुष्प्रचार, आर्थिक दबाव और राजनीतिक प्रभाव जैसे साधनों का मिश्रण हो सकता है। इस प्रकार के संघर्ष में किसी राज्य को हमेशा औपचारिक युद्ध की घोषणा करने की आवश्यकता नहीं होती। विरोधी देश की संस्थाओं पर दबाव डालना, सामाजिक विभाजन को बढ़ाना, सूचना वातावरण को प्रभावित करना और सीमित सैन्य कार्रवाई करना व्यापक रणनीति के हिस्से हो सकते हैं। इस युद्ध की प्रमुख चुनौती यह है कि विभिन्न गतिविधियों के बीच संबंध पहचानना कठिन हो सकता है। किसी साइबर हमले, गलत सूचना अभियान या सीमित सीमा घटना को अलग–अलग घटना मानने के बजाय उसके व्यापक सामरिक संदर्भ को समझना आवश्यक होता है। इस परिस्थिति में राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सेना की जिम्मेदारी नहीं रह जाती। पुलिस, खुफिया एजेंसियों, नागरिक प्रशासन, तकनीकी संस्थानों, मीडिया और निजी क्षेत्र के बीच समन्वय भी आवश्यक हो जाता है।

सैन्य रणनीति का विकास– रणनीति की अवधारणा और महत्त्व– सैन्य रणनीति का आशय राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सैन्य शक्ति और अन्य राष्ट्रीय संसाधनों के

उपयोग की व्यापक योजना से है। रणनीति युद्ध के उद्देश्यों, उपलब्ध संसाधनों, संभावित विरोधी की क्षमताओं, भौगोलिक परिस्थितियों और संभावित परिणामों को ध्यान में रखती है। सैन्य रणनीति और युद्धक युक्ति में अंतर समझना आवश्यक है। रणनीति व्यापक उद्देश्यों और संसाधनों के समन्वय से संबंधित होती है, जबकि युद्धक युक्ति विशिष्ट परिस्थितियों में सैनिक इकाइयों द्वारा की जाने वाली कार्रवाइयों से संबंधित है। आधुनिक परिस्थितियों में प्रभावी रणनीति के लिए सैन्य शक्ति के अतिरिक्त आर्थिक स्थिरता, तकनीकी क्षमता, कूटनीतिक सहयोग और जनसमर्थन भी आवश्यक हैं।

संयुक्त सैन्य अभियानः आधुनिक युद्ध में स्थल, जल और वायु सेनाओं के बीच समन्वय अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गया है। संयुक्त अभियान का उद्देश्य विभिन्न सैन्य शाखाओं की क्षमताओं को एकीकृत करके राष्ट्रीय सुरक्षा के लक्ष्यों को अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त करना है। स्थल सेना क्षेत्रीय नियंत्रण और जमीनी अभियानों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नौसेना समुद्री मार्गों की सुरक्षा, समुद्री संचार और समुद्री क्षेत्र में शक्ति प्रदर्शन से जुड़ी है। वायु सेना वायु रक्षा, निगरानी, परिवहन और अन्य हवाई अभियानों में योगदान देती है। इनके साथ अंतरिक्ष क्षमताओं का समन्वय भी आवश्यक हो गया है। संयुक्तता के लिए साझा संचार प्रणाली, मानकीकृत प्रक्रियाएँ, प्रशिक्षण और एकीकृत कमान व्यवस्था की आवश्यकता होती है।

भारत के संदर्भ में संयुक्तता और थिएटर कमान से संबंधित सुधारों का उद्देश्य विभिन्न सैन्य सेवाओं के बीच समन्वय को बेहतर बनाना रहा है। इन सुधारों की सफलता संस्थागत समन्वय, संसाधनों के वितरण और स्पष्ट कमान संबंधों पर निर्भर करती है।

नेटवर्क–केंद्रित युद्धः नेटवर्क–केंद्रित युद्ध में विभिन्न सैन्य इकाइयों, सेंसरों, कमान केंद्रों और हथियार प्रणालियों को सूचना नेटवर्क के माध्यम से जोड़ा जाता है। इसका उद्देश्य समय पर सटीक जानकारी उपलब्ध कराकर निर्णय लेने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाना है। इस प्रकार की प्रणाली में किसी क्षेत्र से प्राप्त सूचना का उपयोग अन्य सैन्य इकाइयाँ भी कर सकती हैं। इससे परिस्थिति की साझा समझ विकसित होती है और आवश्यकता के अनुसार संसाधनों का समन्वय किया जा सकता है। हालाँकि नेटवर्क पर अत्यधिक निर्भरता जोखिम भी उत्पन्न करती है। संचार बाधित होने, डेटा में त्रुटि होने या नेटवर्क पर साइबर हमला होने की स्थिति में निर्णय लेने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है। इसलिए आधुनिक सैन्य रणनीति में सुरक्षित नेटवर्क के साथ वैकल्पिक संचार व्यवस्था और विकेंद्रीकृत निर्णय क्षमता भी आवश्यक हैं।

सटीक मारक क्षमता और तकनीकी श्रेष्ठता– आधुनिक हथियार प्रणालियों में सटीकता का महत्त्व बढ़ा है। निर्देशित मिसाइलें, आधुनिक रडार, उन्नत निगरानी प्रणालियाँ और लक्ष्य निर्धारण तकनीक सैन्य अभियानों को प्रभावित करती हैं। सटीक मारक क्षमता का उद्देश्य निर्धारित लक्ष्य पर प्रभावी कार्रवाई करना तथा अनावश्यक क्षति को कम करना है। लेकिन तकनीकी श्रेष्ठता मात्र से सफलता सुनिश्चित नहीं होती। लक्ष्य की सही पहचान, विश्वसनीय खुफिया सूचना, उपयुक्त राजनीतिक उद्देश्य और नागरिकों की सुरक्षा भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं। तकनीकी रूप से उन्नत सेना को भी रसद, रखरखाव, प्रशिक्षण

और युद्ध के दीर्घकालिक आर्थिक खर्च का ध्यान रखना पड़ता है। इसलिए सैन्य आधुनिकीकरण को व्यापक राष्ट्रीय क्षमता से जोड़कर देखना चाहिए।

स्वायत्त प्रणालियाँ– आधुनिक सैन्य क्षेत्र में डेटा विश्लेषण, निगरानी, निर्णय सहायता, रखरखाव की योजना और प्रशिक्षण जैसे कार्यों में उपयोगी हो सकती है। विशाल मात्रा में प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करके यह कमांडरों को संभावित परिस्थितियों को समझने में सहायता प्रदान कर सकती है। गलत या अपूर्ण डेटा, एल्गोरिदम की सीमाएँ और प्रतिद्वंद्वी द्वारा जानबूझकर उत्पन्न की गई भ्रामक सूचनाएँ गलत निर्णय का कारण बन सकती हैं। स्वायत्त हथियार प्रणालियों के संदर्भ में मानवीय निगरानी, जवाबदेही और अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का पालन विशेष रूप से आवश्यक है। सैन्य निर्णयों में मानवीय विवेक तथा राजनीतिक नियंत्रण की भूमिका समाप्त नहीं की जा सकती।

आधुनिक युद्ध में आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक आयाम– आधुनिक युद्ध की सफलता केवल युद्धक्षेत्र में प्राप्त विजय से निर्धारित नहीं होती। लंबे समय तक सैन्य अभियान चलाने के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधन, औद्योगिक उत्पादन, ऊर्जा आपूर्ति, हथियारों की उपलब्धता और प्रशिक्षित मानव संसाधन आवश्यक हैं। आर्थिक प्रतिबंध, व्यापारिक दबाव, तकनीकी निर्यात पर नियंत्रण और महत्त्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान भी राज्यों की रणनीतिक क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और रक्षा क्षमता के बीच गहरा संबंध है। मनोवैज्ञानिक युद्ध भी आधुनिक रणनीति का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इसका उद्देश्य विरोधी के मनोबल, जनसमर्थन और निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करना हो सकता है। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के विस्तार ने सूचना के प्रसार की गति बढ़ा दी है। गलत सूचना, भ्रामक प्रचार और कृत्रिम रूप से निर्मित सामग्री सामाजिक विश्वास को कमजोर कर सकती है। इसलिए नागरिकों में मीडिया साक्षरता, विश्वसनीय सूचना व्यवस्था और संकट के समय पारदर्शी सरकारी संचार आवश्यक हैं।

भारतीय संदर्भ में आधुनिक युद्ध और सैन्य रणनीति– भारत की भौगोलिक स्थिति, विशाल सीमाएँ, हिंद महासागर में सामरिक उपस्थिति और विविध सुरक्षा चुनौतियाँ उसकी सैन्य रणनीति को विशेष स्वरूप प्रदान करती हैं। भारत को स्थलीय सीमाओं से संबंधित चुनौतियों के साथ समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद, साइबर खतरों और तकनीकी प्रतिस्पर्धा का भी सामना करना पड़ता है।

सीमावर्ती सुरक्षा और पारंपरिक सैन्य क्षमता: भारत की सुरक्षा व्यवस्था में स्थल सेना की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पर्वतीय क्षेत्रों, सीमावर्ती क्षेत्रों और विविध जलवायु परिस्थितियों में सैन्य तैनाती के लिए विशेष प्रशिक्षण, उपयुक्त उपकरण और प्रभावी रसद व्यवस्था की आवश्यकता होती है। आधुनिक तकनीक सीमाओं की निगरानी, संचार, मौसम संबंधी जानकारी और परिस्थितिजन्य जागरूकता में योगदान देती है। फिर भी कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में मानवीय कौशल, नेतृत्व और सैनिकों की तैयारी का महत्त्व बना रहता है। इसलिए भारत के लिए सैन्य आधुनिकीकरण का उद्देश्य केवल नए हथियार खरीदना नहीं, बल्कि प्रशिक्षण,

रखरखाव, आधारभूत संरचना और तकनीकी एकीकरण को भी सुदृढ़ करना होना चाहिए।

समुद्री सुरक्षा और हिंद महासागरः भारत की अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण भाग समुद्री व्यापार तथा ऊर्जा आपूर्ति से जुड़ा है। हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री मार्गों की सुरक्षा, समुद्री डकैती की रोकथाम, आपदा राहत और मानवीय सहायता नौसैनिक रणनीति के प्रमुख आयाम हैं। आधुनिक नौसैनिक शक्ति में पनडुब्बियाँ, समुद्री निगरानी विमान, युद्धपोत, उपग्रह आधारित संचार और मानवरहित प्रणालियाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत के लिए समुद्री रणनीति का उद्देश्य केवल सैन्य शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि समुद्री व्यापार की निरंतरता, क्षेत्रीय स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करना भी है।

रक्षा आत्मनिर्भरता और स्वदेशी तकनीकः आधुनिक युद्ध में तकनीकी निर्भरता राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है। यदि किसी देश को महत्त्वपूर्ण हथियारों, पुर्जों, सॉफ्टवेयर या रखरखाव के लिए बाहरी आपूर्ति पर अत्यधिक निर्भर रहना पड़े, तो संकट के समय उसकी सैन्य तैयारी प्रभावित हो सकती है। भारत में स्वदेशी रक्षा उत्पादन, अनुसंधान एवं विकास, रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों, निजी उद्योगों और स्टार्टअप संस्थानों की भूमिका बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य घरेलू औद्योगिक क्षमता का विस्तार और आवश्यक रक्षा प्रणालियों की उपलब्धता में सुधार करना है। हालाँकि रक्षा आत्मनिर्भरता के लिए केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान, परीक्षण, तकनीकी नवाचार, कुशल मानव संसाधन और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी उत्पादन भी आवश्यक हैं।

आतंकवाद और आंतरिक सुरक्षाः आतंकवाद आधुनिक राष्ट्रीय सुरक्षा की प्रमुख चुनौतियों में से एक है। आतंकवादी संगठन प्रायः पारंपरिक सैन्य संरचना के बजाय छोटे समूहों, गुप्त नेटवर्क और प्रचार माध्यमों का उपयोग करते हैं। इनसे निपटने के लिए खुफिया जानकारी, पुलिस व्यवस्था, सीमा प्रबंधन, वित्तीय निगरानी और आवश्यकतानुसार सैन्य सहयोग के बीच समन्वय महत्त्वपूर्ण है। आतंकवाद विरोधी रणनीति में नागरिकों की सुरक्षा, कानून के शासन और मानवाधिकारों का सम्मान भी आवश्यक है। सैन्य शक्ति का प्रयोग व्यापक राजनीतिक और सामाजिक रणनीति के साथ समन्वित होना चाहिए। केवल सैन्य कार्रवाई से आतंकवाद के सभी सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक कारणों का समाधान नहीं किया जा सकता।

डिजिटल अवसंरचना– भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था, वित्तीय नेटवर्क, संचार व्यवस्था और सरकारी सेवाएँ राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग बनाती हैं। रक्षा संस्थानों के साथ ऊर्जा, परिवहन, दूरसंचार और अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों की डिजिटल सुरक्षा भी आवश्यक है। इसके लिए कुशल विशेषज्ञों का विकास, संस्थागत समन्वय, नियमित सुरक्षा परीक्षण और संकट प्रबंधन की प्रभावी व्यवस्था आवश्यक है। सरकारी तथा निजी संस्थानों के बीच सहयोग से खतरों का पता लगाने और उनके प्रभाव को कम करने की क्षमता बेहतर हो सकती है।

आधुनिक सैन्य रणनीति की प्रमुख चुनौतियाँ– आधुनिक युद्ध की बदलती प्रकृति के बावजूद अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। पहली चुनौती तकनीकी प्रतिस्पर्धा है। नई प्रणालियों का विकास तेज गति से हो रहा है,

लेकिन उनके परीक्षण, प्रशिक्षण और एकीकरण में समय तथा संसाधन लगते हैं। दूसरी चुनौती रक्षा व्यय और आर्थिक प्राथमिकताओं के बीच संतुलन है। किसी भी देश को राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, आधारभूत संरचना और सामाजिक विकास पर भी ध्यान देना पड़ता है। तीसरी चुनौती युद्ध के कानूनी और नैतिक पक्षों से संबंधित है। आधुनिक हथियारों की विनाशकारी क्षमता, स्वायत्त प्रणालियों और नागरिक अवसंरचना पर संभावित प्रभावों के कारण अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का पालन अत्यंत आवश्यक है। चौथी चुनौती सूचना की विश्वसनीयता है। डिजिटल माध्यमों से बड़ी मात्रा में सूचना उपलब्ध होती है, लेकिन उसका सत्यापन कठिन हो सकता है। गलत सूचना के आधार पर लिए गए निर्णय गंभीर परिणाम उत्पन्न कर सकते हैं। पाँचवीं चुनौती बहुक्षेत्रीय समन्वय है। आधुनिक सुरक्षा समस्याओं का समाधान केवल एक सैन्य शाखा या सरकारी संस्था द्वारा संभव नहीं है। विभिन्न संस्थानों के बीच सहयोग, साझा प्रशिक्षण और स्पष्ट जिम्मेदारियाँ आवश्यक हैं। छठी चुनौती सैन्य आपूर्ति शृंखलाओं की सुरक्षा है। आधुनिक हथियार प्रणालियाँ इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, सॉफ्टवेयर, विशेष सामग्रियों और वैश्विक औद्योगिक नेटवर्क पर निर्भर हो सकती हैं। संकट के समय इनकी उपलब्धता बनाए रखना रणनीतिक आवश्यकता है।

आधुनिक सैन्य रणनीति के विकास की संभावनाएँ– आधुनिक सैन्य रणनीति के प्रभावी विकास के लिए कुछ प्राथमिकताओं पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। प्रथम, सैन्य आधुनिकीकरण को दीर्घकालिक राष्ट्रीय सुरक्षा नीति से जोड़ा जाना चाहिए। हथियारों की खरीद के साथ प्रशिक्षण, रखरखाव, तकनीकी अनुकूलता और जीवनचक्र लागत का भी आकलन होना चाहिए। द्वितीय, अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। संचार तकनीक, सेंसर, इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों और मानवरहित उपकरणों के क्षेत्र में स्वदेशी क्षमता राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत कर सकती है। तृतीय, संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण और संस्थागत समन्वय को बेहतर बनाया जाना चाहिए। विभिन्न सैन्य सेवाओं के बीच साझा प्रक्रियाएँ और स्पष्ट कमान व्यवस्था संकट के समय अधिक प्रभावी प्रतिक्रिया में सहायता करती हैं। चतुर्थ, नागरिक–सैन्य सहयोग को सुदृढ़ करना चाहिए। संचार, ऊर्जा, परिवहन और औद्योगिक उत्पादन में निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उपयोगी हो सकती है। पंचम, रणनीतिक अध्ययन और सैन्य शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। सैन्य नेतृत्व को इतिहास, भू–राजनीति, तकनीकी विकास, अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय कानून की समझ भी आवश्यक है। षष्ठम, अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा संकट प्रबंधन की व्यवस्थाओं को मजबूत करना चाहिए। सैन्य संवाद, विश्वास निर्माण, समुद्री सहयोग और हथियार नियंत्रण से संबंधित प्रयास क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान दे सकते हैं। अंततः, आधुनिक सैन्य रणनीति का विकास केवल अधिक शक्तिशाली हथियारों के निर्माण से नहीं, बल्कि राजनीतिक विवेक, तकनीकी क्षमता, आर्थिक स्थिरता और संस्थागत दक्षता के संतुलित संयोजन से संभव है।

निष्कर्ष– आधुनिक युद्ध की प्रकृति में परिवर्तन एक निरंतर ऐतिहासिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल के प्रत्यक्ष सैन्य संघर्षों से लेकर औद्योगिक युद्ध, परमाणु प्रतिरोध और वर्तमान बहुआयामी संघर्षों तक युद्ध के साधनों और संचालन की पद्धतियों में व्यापक बदलाव आया है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने युद्ध की गति, पहुँच, सटीकता और विनाशकारी क्षमता को

बढ़ाया है। अंतरिक्ष आधारित निगरानी और सूचना अभियानों ने सैन्य रणनीति को अधिक जटिल तथा परस्पर निर्भर बना दिया है। इसके बावजूद युद्ध के मूल राजनीतिक उद्देश्य, मानवीय निर्णय और राष्ट्रीय हितों का महत्त्व समाप्त नहीं हुआ है। तकनीकी श्रेष्ठता सैन्य सफलता में योगदान दे सकती है, लेकिन वह स्पष्ट राजनीतिक उद्देश्य, प्रशिक्षित नेतृत्व, प्रभावी रसद, आर्थिक क्षमता और अंतरराष्ट्रीय वैधता का विकल्प नहीं बन सकती।

भारत के संदर्भ में आधुनिक सैन्य रणनीति के विकास के लिए पारंपरिक सैन्य क्षमता और नई तकनीकों के बीच संतुलन आवश्यक है। स्थल, जल और वायु सेनाओं की संयुक्तता, साइबर सुरक्षा, स्वदेशी रक्षा उत्पादन, अनुसंधान एवं विकास तथा विश्वसनीय खुफिया व्यवस्था को सुदृढ़ करना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण है। साथ ही, नागरिक संस्थानों के साथ सहयोग और अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून के प्रति प्रतिबद्धता भी आवश्यक है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिक युद्ध की सफलता केवल हथियारों की संख्या या तकनीकी श्रेष्ठता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि राजनीतिक उद्देश्य, रणनीतिक दूरदर्शिता, संसाधनों के कुशल उपयोग, मानवीय विवेक और बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अनुकूलन क्षमता पर निर्भर करती है। भविष्य की सैन्य रणनीति वही अधिक प्रभावी होगी जो तकनीकी नवाचार के साथ राष्ट्रीय हितों, मानवीय मूल्यों और दीर्घकालिक शांति के उद्देश्यों के बीच संतुलन स्थापित कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Clausewitz, Carl von. On War. Edited and translated by Michael Howard and Peter Paret- Princeton University Press, 1976.
2. Kautilya. The Arthashastra- Translated by R. Shamasastry. Government Press, Mysore, 1915.
3. Freedman, Lawrence. Strategy: A History. Oxford University Press. 2013.
4. Gray, Colin S. The Strategy Bridge: Theory for Practice. Oxford University Press, 2010.
5. Hoffman, Frank G. Conflict in the 21st Century: The Rise of Hybrid Wars. Potomac Institute for Policy Studies, 2007.
6. Singer, P. W. Wired for War: The Robotics Revolution and Conflict in the 21st Century. Penguin Press, 2009.
7. International Committee of the Red Cross (ICRC). International Humanitarian Law and the Challenges of Contemporary Armed Conflicts. ICRC, Geneva.
8. Ministry of Defence, Government of India. Annual Reports. विभिन्न वर्ष।
9. United Nations Office for Disarmament Affairs (UNODA). परमाणु निरस्त्रीकरण, अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा और हथियार नियंत्रण से संबंधित प्रकाशन।